Introduction

प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता

RATIONAL OF THE SUBJECT (NECESSITY OF RESEARCH ON THIS TOPIC)

भारतीय संगीत की वाद्य परंपरा में तबले का उद्भव एवं प्रचलन एक अनोखी घटना है। पिछले २००-२५० वर्षोसे इसकी स्थिति संगत वाद्यो में देखने को मिलती है और आज यह तबला आधारभूत संगत वाद्य के रूप में तो उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में मूल आधार बन ही चुका है, परन्तु इसका स्वतन्त्र रूपसे एकल वादन भी प्रचुरता में देखा जा सकता है।

इसमें प्राप्त विभिन्न घरानों के क्रम में, अजराड़ा घराना एक विशिष्टता लिये हुऐ है। इसके स्वनाम धन्य कलाकार प्रो सुधीरकुमारजी सक्सेना गुजरात प्रांत के वडोदरा शहर में स्थायी रूपसे आये और उन्होने तबला वादन में प्रयुक्त अजराड़ा घराने का स्थापन व प्रभावी प्रचार प्रसार यहां किया। यह संगीत के प्रति, गुजरात के प्रति उनकी बहुमूल्य देन बनी। उनके इस कृतित्व से संबधित सारे, तथ्यों, सूत्रों, पक्षों, को एक साथ एकत्रित कर,इस अमूल्य व्यक्तित्व औार कृतित्व का मूल्यांकन करने का प्रयास अभी तक नहीं किया गया है। ऐतद् प्रस्तुत शोध प्रबंध की इस संयोजना से यह पुनीतकार्य संभव हो सके यह शोधार्थी का विनम्र प्रयास है।

परिकल्पना

HYPHOTHESIS

प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी के आगमन से पहले वड़ोदरा में या गुजरात में विभिन्न घरानो का तबला बजता था। लेकिन अजराड़ा घराने के कलाकारों का न तो इससे पहले यहां आगमन हुआ था न कोई गुजरात प्रांत में अजराड़ा घराने का कोई कलाकार स्थित था। तो क्या इससे पहले अजराड़ा घराने की वादन प्रस्तुती गुजरात मे नही होती थी? क्या इस घराने के कोई कलाकार गुजरात प्रांत में विद्यमान नहीं थे? इस प्रकार के विभिन्न प्रश्न आज तक मन में आते थे। प्राप्त तथ्यों का आधार लेकर इसका यथासंभव निराकरण करने का प्रयास किया गया है। इस संदर्भ में जो भी तथ्य प्राप्त हुये उन्हे शोध प्रबंध के रुप में प्रस्तुत किया गया है।

स्वीकृत तथ्य एकत्रित करने की विधि

COVERAGE SCOPE OF STUDY (DATA COLLECTIONS)

अजराड़ा घराने के प्रो. सुधीरकुमारजी के योगदान के संम्बन्ध में कोई लिखित पुस्तक प्राप्त नही है। जो भी विशेष जानकारी प्राप्त है वह तबला विषय की विभिन्न पुस्तकों में यत्र, तत्र, संदर्भो में बिखरी मिलती है। इसके अलावा प्रो सुधीरकुमारजी के साक्षात्कार के आधार पर जानकारी ग्रहण कर विभिन्न अध्यायो में प्रस्तुत शोध प्रबंध में दी गयी है ।

इस से संबधित प्रो. सुधीरकुमारजी के अनेक वार्तालाप प्रसारित हुये हैं। उनके आधार पर भी प्रस्तुत विषय पर लिखने का प्रयास किया गया है।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित सामग्री और पुस्तको के माध्यम से माहिती एकत्रित कर विभिन्न अध्यायो में जानकारी दी है।

गुजरात में और देश विदेश में स्थित प्रो. सुधीरकुमारजी के शिष्यों का साक्षात्कार करने के बाद जो जानकारी प्राप्त हुई, उसेभी, इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया गया है।

वांधित अध्ययनगत उद्देश्य

OBJECTIVE:

गुजरात में अजराड़ा घराने के प्रचार प्रसार,स्थापन में प्रो. सुधीरकुमारजी के योगदान विषयक, उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के बारे में यत्र,तत्र बिखरी हुयी सामग्री को एकसूत्र में पिरोकर तबला विषयक संगीत शिक्षण और सामाजिक परिप्रेक्ष में उपादेयता हेतु प्रस्तुत करना।

प्राप्त साहित्य का समालोचन ऐवं परिवीक्षण :

REVIEW OF LITERATURE

विशेष संबधित सामग्री का ग्रहण प्रामाणिकता के आधार पर निम्न क्रमानुसार किया गया है । अजराड़ा घराना स्वतन्त्र तबला वादन के रुप में

तथा संगत में अपना अलग अस्तित्व रखता है। इस घराने में कई विद्वान कलाकार हो गये हैं जिनके कारण आज अजराड़ा का तबला वादन प्रख्यात हुआ है। प्रो. सुधीरकुमारजी जैसे बुजुर्ग कलाकार आज तक जीवित थे। प्रो सुधीरकुमारजी के गुजरात में आगमन से लेकर आज तक उनका जो योगदान इस घराने के प्रति रहा है उसे प्रस्तुत करना ही प्रस्तुत शोध प्रबंध का उद्देश्य है। संगीत समाज और विभिन्न संगीत संस्थाओ के विद्यार्थी गण इस शोध से पूर्णतः लाभान्वित होंगें ऐसा शोधार्थी को पूर्ण विश्वास है।

शोध कार्य पध्धति एवं योजना :

REAEARCH METHOD AND PLANNING:

प्रस्तुत शोध प्रबंध में संबधित तथ्यों का विश्लेषणात्मक आकलन कर, शोध कार्य पध्धति द्वारा प्रस्तुत किया गया है । इस विषय से संबधित प्राप्त सभी तथ्यो को प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है।

अध्याय क्रम :

1. तबले का संक्षिप्त ऐतिहासिक प्रारंभ एवं तबले के घरानो में अजराड़ा घराने का स्थान।
2. प्रो. सुधीरकुमारजी सक्सेनाजी का जीवन परिचय एवं अजराड़ा घराने में आगमन ।
3. प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का गुजरात में आगमन ।
4. प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी की शिष्य परंपरा का प्रायोगिक योगदान ।

5. प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के विधिवत तबला वादन पध्दति के विषय में उनके अपने विचार तथा तबला शास्त्र के पक्ष में योगदान ।

6. प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी की अपनी बनाई हुई रचनायें ।

7. प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का शिष्य परिवार ऐवं वडोदरा के अन्य राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इस कलाक्षेत्र के स्थानिक दिग्गज कलाकारोंका साक्षात्कार और शिष्य परिवार का परिचय ।

8. निष्कर्ष ।

१ तबले का संक्षिप्ततः इतिहास एवं तबले के घराने में अजराड़ा घराने का स्थान

इस युग के तबला वादन क्षेत्र में, छह घरानें के नाम आदरपूर्वक लिये जाते हैं। इन सभी घरानो का संक्षिप्ततः उल्लेख इस शोध ग्रंथ में किया गया है। इन सभी घरानो में दिल्ली घराना प्राचीन माना जाता है। दिल्ली के पुत्र के रुप में अजराड़ा का नाम लिया जाता है । तबले के जन्म के बारेमें अध्ययन करने के बाद शोधार्थी इस नतीजे पर पहुंचा है कि सर्वमान्य मान्यता के अभावमें उस पर शोध होनी आवश्यक है। कई विद्वानों ने इस पर गौर करने के लिये अथक परिश्रम किये हैं। यह बात सच है कि तबला वाद्य दो सदी से प्रभावी रुप में चला आ रहा है । जो भी हमारे मुख्य घराने हैं इन में भी बाज मुख्यतः दो भागो में बँटा हुआ हैं, पश्चिम बाज और पूरब बाज यानी बंद बाज और खुला बाज । दिल्ली आद्य घराना होते हुऐ यहाँ बंद बाज बजता है। अजराडा घराना दिल्ली घराने से अलग हुआ है तो क्या विशेषता है? अजराड़ा बनानेवाले खलीफाओंने क्या किया होगा कि उसे मान्यता मिल

गयी। अजराडा घराने के खलीफाओंने दिल्ली घराने के मिजाज की ओर विशेष ध्यान देकर उसे सुधार कर और विशेषताओं से सजाकर अजराड़ा घराना बनाया जो आज भी जीवित है और तबले के घराने में अपना अलग अस्तित्व रखता है, इसमें कोई संदेह नही है । इससे यह प्रतीत होता है कि अजराड़ा घराने का स्थान दिल्ली के बाद आदरपूर्वक स्थापित है वह सही है।

२ प्रो. सुधीरकुमारजी का जीवन परिचय एवं अजराड़ा घराने में आगमन

प्रो. सुधीरकुमारजी का जन्म १९२३ में बालीपाड़ा गाँव में हुआ, जो उत्तर प्रदेश में स्थित है। माता, पिता दोनों संगीत में रुचि रखते थे। कायस्थ परिवार में संगीत कला के प्रति बहुत अनुराग था। परंतु कायस्थ परिवार के बालक को विधिवत रुप से संगीत का व्यवसायिक कलाकार बनाया जाय ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते थे। परंतु प्रो सुधीरजी की प्रतिभा के कारण सात साल की उम्रमें ही, प्रथम गुरु उस्ताद बुन्दुखाँ के पास उनकी शिक्षा का प्रारंभ हुआ। वे भी अजराड़ा घराने के ही थे। बाद में अजराड़ा घराने के महान कलाकार तबला नवाज उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहेब के संपर्क में आने के बाद विधिवत गंडाबंध शिष्य हो गये। और उनकी श्रेष्ठ परंपरा आगे चलायी।

प्रो. सुधीरकुमारजी सिर्फ तबला नही बजाते थे, उसके साथ उस जमाने में उन्होने इंग्लिश विषय के साथ सायकॉलोजी, पोलीटीकल सायन्स विषय लेकर स्नातक की उपाधि हांसिल की थी और साथ में तबले का रियाज भी चलता था। भाग्यसे उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ मेरठ में ही रहते थे और सुधीरजी

का माध्यमिक शिक्षण और उच्चस्तरीय शिक्षण मेरठ में ही हुआ। इस संयोग के कारण यह संभव हुआ कि उस्ताद छात्रावास मे आकर उन्हें त्बले की शिक्षा दिया करते थे कभी सुधीरजी उस्ताद के यहाँ चले जाते थे । अपनी प्राप्त राशि में यथा संभव उस्ताद का समाधान किया करते थे। इस तरह प्रो .सुधीरजी का आगमन अजराड़ा घराने में हुआ।

३ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का गुजरात में आगमन :

वडोदरा नगरी के पुण्यशाली नरेश सर सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय एक विलक्षण प्रतिभा संपन्न नरेश के रूप में पूरे भारत वर्ष में प्रख्यात थे । ऐसे कम राज्य थे कि जहां हरेक विषय को न्याय देने के लिये युनिवर्सिटी की स्थापना की गयी हो। बड़ौदा राज्य के दफ्तर में कलावंत कारखाना चलता था, और जाने माने गायक यहां दरबार में राजगायक की हैसियत से थे। तब संगीत सिर्फ राजदरबार तक ही सीमित था इस लिये आम जनताको उस ज्ञान का लाभ हो इस लिये पुण्यशाली महाराजा सर सयाजीराव ने संगीत पाठशाला भी स्थापित की थी और सीखने के लिये बच्चोको पुरस्कार भी दिये जाते थे। कालातंर से १९५० में इस पाठशाला का रुपातंर म्युजिक कॉलेज मे हुआ और फिर फाइनआर्ट्स कॉलेज के साथ उसे रखा गया। महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी की उपकुलपति श्रीमती हंसाबेन मेहता जब दिल्ली गयीं थी, वहाँ एक संगीत सभा में प्रो. सुधीरकुमारजी अपनी कला प्रस्तुत कर रहे थे। श्रोताओमें पाश्चात्य कलाकार भी थे। कार्यक्रम प्रभावशाली था तथा अंग्रेजी भाषामें था। यह कार्यक्रम सुनकर श्रीमती हंसाबेन प्रभावित हुई और उन्होने प्रो. सुधीरजी को कहा की क्या आप बड़ौदा स्थित म्यूजिक

कॉलेज में अध्यापक की हैसियत से आ सकते है? तब सर के हां कहने पर १९५० में विधिवत म्युजिक कॉलेज में अध्यापक की हैसियत से उन्हे कार्यभार दिया गया। गुजरात का अहोभाग्य समझिये कि तबला क्षेत्र में एक अति प्रवीण और उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त गुरु ने, गुजरात के बड़ौदा शहर में स्थायी हो कर अपने विधिवत शुध्द तबला वादन, वह भी अजराड़ा घराने के तबला वादन का ज्ञान देना म्युजिक कॉलेज में शुरु किया, जो बड़ौदा से पूरे गुजरात में आजतक चला आ रहा है।

इस प्रकार से पूज्य सक्सेना साहब का गुजरात में आगमन हुआ।

४ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी की शिष्य परंपरा एवं प्रयोगात्मक योगदान

सन १९५० सुधीरजी ने म्युजिक कॉलेज मे प्राध्यापक का कार्यभार संभाला और उसी दिनसे यहां शास्त्रोक्त तबला बजना और सीखना शुरु हुआ। तबले का मुह छोटा भी हो सकता है ऐसा छात्रो ने पहलीबार देखा, क्यों कि यहाँ के तबले बड़े मुंह वाले थे। कॉलेज के कोर्स में हरेक सालमें परन ही सिखाते थे, क्योंकि यहाँ सभी शिक्षक पखावजी थे। सुधीरजी के आते ही यहाँ का कोर्स नये तरह से बनाया गया। तबले पर सिर्फ परन नही बजती है वरन इसमें कायदा, पलटा, टुकडा, मुखडा, गत, पेशकार, इत्यादि सब बजता है और इन सभी बातों को उन्होंने कोर्स में शामिल किया। इस तरह से कॉलेज के छात्र मात्र कालेज के छात्र न रहे वरन गुरु शिष्य परंपरा भाव से भी वे विषय ज्ञान प्राप्तकर शिष्यत्व प्राप्त कर सके। पूरे हिन्दुस्तान के जाने माने कलाकार गुजरात में अपना कार्यक्रम देने आते थे। उन सभी को

पता होता था कि सुधीरजी का निवास बड़ौदा मे ही है तो प्रायः सभी कलाकार उनकी संगत लेते थे और अपना सौभाग्य समझते थे। इसी कारण पूरे गुजरात में सुधीरजी पहचाने जाने लगे और उनका शिष्य परिवार पूरे गुजरात मे फैला। कई शिष्य कॉलेज मे दाखिल हुए, कई उनके घर आकर सीखने लगे। इसी कारण अजराडा घराने की परंपरा गुजरात में फलने, फूलने लगी अहमदाबाद, भावनगर, राजकोट, सुरत, बिलीमोरा, डभोई, इत्यादि सभी प्रमुख शहरोंमें अजराड़ा बाज प्रमुखतासे बजता है और लोकप्रिय हुआ है। प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के विधिवत तबला वादन पध्दति के बारे में अपने विचार तथा शास्त्र पक्ष के बताये विचार यहां प्रस्तुत है।

५ योगदान

तबला विषय के कई विद्वान कलाकार इस भारत वर्ष में हो गये, किन्तु ज्यादातर क्रियात्मक पक्ष पर ही ज्यादा जोर देते थे। तथा शास्त्र पक्ष को इतना प्राधान्य नहीं देते थे। किंतु प्रो. सुधीरजी शास्त्र एवं क्रियात्मक दोनों पक्षो में पारंगत थे। इस के लिये उन्होनें तबला वाद्य पर जितनी रचनाऐं बजती हैं उन सभीका विधिवत, शास्त्र संम्मत शिक्षण बच्चों को दिया। उनके अनेक लेख, आकाशवाणी के वार्तालाप जो सभी प्रादेशिक भाषामें अनुदित हो कर प्रसारित हुऐ। जिससे तबले का शास्त्र पक्ष विशेष पुष्ट बना। प्रो. सुधीरजीकुमारजी की प्रकाशित एक पुस्तक व अन्य प्राप्त साहित्य से स्पष्ट होता हैं कि वे क्रियात्मक पक्ष के साथ साथ शास्त्र पक्ष में माहिर थे और क्रियात्मक पक्ष की पुष्टि करने के लिये उनके दिये हुऐ कार्यक्रमों के छायाचित्र इस शोधग्रंथ में प्रस्तुत किये गये हैं।

६ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी की बनायी हुई रचनाऐं

प्रो. सुधीरजी की बनाई विभिन्न विधिवत शास्त्रोक्त रचनाओं में सुन्दरता दिखाई देती है। यह प्रमाणरूप से बनाई हुई रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। साथोसाथ सौंदर्य शास्त्रका उपयोग इन रचनाओ में ओतप्रोत है यह दिखाई देता है। इनमें कायदे, गत, तुकड़े, जोड़ कायदे इत्यादी प्रमुख अनेक रचनाऐं बनीं हैं। इन सबको प्रस्तुत शोध प्रबंध के इस अध्याय में विधिवत प्रस्तुत किया गया है।

७ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य परिवार एवं बड़ौदा के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकारों के साक्षात्कार और शिष्य परिवार का विवरण :

प्रो. सक्सेनाजी के प्रमुख शिष्यों में स्व. गणपतराव घोडके, स्व. कालुराम भवरिया, सर के पटटशिष्य स्व. मधुकर गुरव, तद् पश्चात अनेक शिष्य कोई रेडियो स्टेशन, म्युजिक कॉलेज में कार्यरत है जैसे श्री. रवीन्द्र निक्ते श्री सरपोतदार, श्री. खादिमहुसेन, डॉ अजय अष्टपुत्रे, श्री चंद्रशेखर पेंडसे, केदार मुकादम, नंदकिशोर दाते, श्री. चंद्रकान्त भोंसले, श्री विक्रम पाटील, जो इन्टर नेशनल वादक है, अहमदावाद के दिव्यांग वकील, श्री रमेश बापोदा राजकोट के दवे, मोडासा के डॉ. गौरांग भावसार ये सभी शिष्य तबलावादन से जुडे हुऐ हैं। श्री. सुधीरजी के बारेमें अन्य कलाक्षेत्र के कलाकारों का साक्षात्कार ले कर उनके अपने मंतव्य जैसे प्रो. आर. सी मेहता, प्रो. मार्कन्ड् भट जो नाटय क्षेत्र से जुडे हुए है, पं. सुन्दरलाल गांगाणी जो कथ्थक नृत्य के

साथ जुडे हुए है इन सभी महानुभावो के विचारों से सक्सेनाजी के प्रति दी गई भावांजलि से वर्तमान शोध प्रबंध एक आदर्श, लाभदायी,समाजोपयोगी एक आदर्श शोध प्रबंध बन सकेगा, ऐसी मुझे आशा है।

८ निष्कर्ष :

CONCLUSION

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी साहब से संबधित व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में सारे अप्रकाशित एवं अल्प प्रकाशित तथ्यों को एक सूत्र में पिरोकर जब इस शोध प्रबंध पर विचार किया जाता है तब उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सोने में सुगंध जैसा संयोग रुप बनता है। उनका शास्त्रपक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष पर जो अधिकार था इसका संपूर्ण विवरण दिया गया है। उनके प्रति आदरणीय ख्याति प्राप्त कलाकारों का जो भी विविध संगीत क्षेत्र से जुड़े हुऐ हैं उनके विचारों से भी यह महत्व पूर्ण दिखाई देता है। विद्यार्थीयों की रुचि रियाज की ओर कैसे बढ़ें इस से दिखाई देता है कि उनका योगदान संगीत समाज एवं संगीत शैक्षणिक जगत् के लिए उपयोगी सिध्ध् हुआ है।

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का आगमन होने के समय जो स्थिति थी और आज के युग में जो स्थिति गुजरात में है उसमें निश्चित रुप से परिवर्तन दिखाई देता है। इसमें कोइ संदेह नहीं है। जिसके ठोस उदाहरण शोधप्रबंध में दिये है । १९५० में गुजरात में अजराड़ा घराने की स्थिति एवं आज की स्थिति में परिवर्तन दिखाई देता है।

. प्रो .सुधीरकुमार द्वारा अत्यंत परिश्रम साध्य काम, अति सरल बना, यह अजराड़ा घराने के गुजरात में फैलने के बाद दिखाई देता है इन तथ्यों को क्रमागत रुप में संपूर्णतः इस शोधग्रंथ में लिखने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है।

प्रो .सुधीरकुमार ने न केवल तबला सीखा,लिखा अपितु उसे अत्यंत कठिन परिश्रम करके आत्मसात किया,यह बात इस शोधग्रंथ द्वारा स्पष्ट होती है। फलतः प्रो .सुधीरकुमारजी का नाम अजराड़ा घराने में आज भी अमर हैं।

प्रो .सधीरकुमार सक्सेनाजीका शोधार्थी द्वारा शोधग्रंथ के शीर्षक के अनुसार योगदान तो है ही, किंतु शोधकार्य पूर्ण करने के पश्चात शोधार्थी दावे के साथ कह सकता है कि सुधीरकुमारजी ने अजराड़ा घराने का गुजरात में स्थापन व प्रचार,प्रसार तो किया ही इसके अलावा उन्होनें देश,विदेशो में भी अपने शिष्य परिवार को फैलाने का अथक परिश्रम किया । जिससे यह सिध्द होता है कि राज्यस्तरीय, राष्ट्रीयस्तर के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रिय स्तर पर भी उनका योगदान रहा है।

प्रो .सुधीरकुमार सक्सेनाजी का शोधग्रंथ में दिये गये शास्त्र,एवं क्रियात्मक पक्षों में जो योगदान है वह तो अमर ही है लेकिन उनकी बनाई हुई बंदिशे एवं शास्त्र पक्ष में उनके विचार यह बात स्पष्ट करतें है कि उनका व्यक्तित्व भी एक आदर्श तबला वादक के साथसाथ आदर्श शिक्षक व मानव का रहा है। क्रियात्मक पक्ष में उनकी स्वयं रचित रचनाओं के द्वारा उनका सौंदर्य शास्त्रपर का अभ्यास भी दिखाई देता है। निश्चित रुप से, सौंदर्य शास्त्र विषय पर उनका प्रभुत्व रहा।

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी ने अपने गुरु से तालीम प्राप्त करने के बाद केवल अपना ही नाम अमर नहीं किया वरन अपने गुरु एवं अजराड़ा घराने का नाम अमर किया साथोंसाथ बड़ौदा जैसी कलानगरी में महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी में बहुत बड़ा योगदान दिया है । जिसके कारण आपके द्वारा अनेक राष्ट्रीय ऐवं अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कलाकार तैयार हुए। उनके पश्चात् अजराड़ा घराना अमर रहे, इसके लिए ठोस कार्य आपने किया है। यह प्रस्तुत शोध प्रबंध से देखा जा सकता है।

संगीत विषय के अलावा संगीत के संदर्भ में जीवन संबधी विचारों को भी वह प्रधानता देते थे जिससे उनकी उच्चकोटि की सूझबुझ देखी जा सकती है।

इस प्रकार वर्तमान शोध प्रबंध से संगीत के क्षेत्र में तबला जगत, शिक्षण, विद्यार्थीगण और तबला प्रस्तुतियाँ निश्चित रुपसे लाभान्वित होंगी ऐसे दृढ विनम्र विश्वास के साथ......

भास्कर शरदचंद्र पेंडसे

: ऋण निर्देश :

अपना शोध प्रबंध लिखने के बाद ऋण निर्देश नहीं करुँ तो यह सही नहीं होगा। मेरी प्रारंभिक शिक्षा मराठी माध्यम में हुई। स्नातक हो ने बाद मुझे गुजरात विद्युत बोर्ड में नोकरी मिल गयी। नौकरी साथ-साथ मैने तबले में मास्टर डिग्री हासिल की। क्यों कि मुझे संगीत से बेहत लगाव था। जिससे कारण तबले का रोज समयानुसार रियाज़ करता था। साथमें अन्य संगीत संस्थाओं में कार्य भी करता हुं। जिसमें की संस्कार भारती जो राष्ट्रीय कक्षा की है स्थानिक संस्था निनाद कला केन्द्र, आमद संस्था जिसको प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी के शिष्य परिवार ने स्थापित किया है। इसका एक ही उद्देश्य है तबला एकल वादन के कार्यक्रम लोंगो को सुनने को मिले यह संस्था प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के मार्गदर्शन में स्थापित हुई थी। इस संस्था का एक ही उद्देश्य है कि अजराड़ा घराने का तबला सदैव बजता रहे। इसी उद्देश्य से कमिटी के हरेक सदस्य को तबले का एकलवादन कार्यक्रम बजाना ही पडता है।

इस संस्था में तबला वाद्य पर चर्चा सत्र जरुर रखते है। एक बार चर्चा करते समय मैने इच्छा व्यक्त की, कि गुरुजी पर मैं कुछ लिखना चाहता हुँ

तभी मेरे सभी गुरु बंधुओने मुझे प्रोत्साहन दिया। इसमें मेरे गुरु बंधु डॉ. अजय अष्टपत्रेजी का मुझे बड़ा सहयोग मिला उन्होंने मुझे कहा की सर पर आप थीसिस् लिखो। थीसिस् किस प्रकार से लिखनी है इसकी मेथोडोलॉजी कैसी होती है इसके बारे में उन्होंने समझाया। आखिर गुरुजी से मैने और डॉ. अष्टपुत्रेजी ने बातचित की सर मै आप के बारे में कुछ लिखना चाहता हूँ। तभी गुरुजी ने कहा की यार मेरे पर ज्यादा से ज्यादा दस पन्ने लिखोगे। इसके बाद गुरुजी से अनुमति ले कर मैने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया। फॅकल्टी के धृपद धमार गायक श्री. श्रीकांत चतुर्वेदीजी मेरे अधिकृत मार्गदर्शक बने। आपके मार्गदिर्शन में आपने मुझे प्रोत्साहित किया। काफी लिखने के बाद मेरे मन में एक यक्ष प्रश्न उठा, कि जो मैने लिखा है वह साहित्य की दृष्टि से कितना सही और उचित है। परंतु ईश्वरी कृपा से मुझे डॉ. मधु शर्माजी का सहयोग प्राप्त हुआ आपने हिन्दी साहित्य में डॉक्टरेट किया है। आपने अपना कीमती समय निकाल कर कम समय में मेरे शोध प्रबंध को साहित्यिक बनाने में मदद की। मैं उनका हृदय पूर्वक आभारी हुँ।

मेरे शोध प्रबंध लिखते समय दो दुःखद घटनाए घटी एक तो मेरे प्रिय गुरुजी ३०-११-२००७ को देहान्त हो गया। इस घटना का साक्षी होने के कारण मेरा दिल इस कार्य से उठ गया और आगे का कार्य मैने बंध कर

दिया। यह बात मेरी गुरुमाता श्रीमती प्रज्ञाबहन ने सुनी तुरंत उन्होंने मुझे घर बुलाकर आज्ञा दी, कि आपको शोध प्रबंध का कार्य आगे बढ़ाना है और गुरुमाताके आज्ञानुसार मैने अपना कार्य आगे बढ़ाया। काफ़ी बातें मुझे उन्होंने बतायी, जिससे मयझे कार्य संपूर्ण करने में मदद मिली। दुसरी घटना मेरे पुज्य पिताजी का देहावसान हुआ, इस घटना से मै पुरी तरह टूट गया था। किंतु परिवार ने मुझे साथ दिया मेरे सुपुत्र श्री भूषण पेंडसे ने मुझे काफ़ी मदद की और गुरुजी की बनायी हुई रचनाओं का नोटेशन कर के दिया। मेरे इस कार्य में मेरे ऑफीस के मेरे मित्र श्री कमलेश गज्जर, श्री विजय जनसारी, श्री के.जी. मकवाणा, श्री मनजीतसिंह सोढी और मेरे उच्च अधिकारी एवं स्टाफ ने मुझे बहुत सहकार दिया इन सभी का ह्रदय पूर्वक आभारी हुँ।

इसी के साथ मेरे मित्र श्री जितेन्द्र करवे, सौ. दिपाली भोळे, निवेदिता थोरात एवं कॉलेज के मेरे गुरुजन एवं स्टाफ मित्रों का मैं आभारी हुँ।